साहित्योत्सव
Festival of Letters
28 जनवरी - 2 फ़रवरी 2019
भाषाएँ अनेक • देश एक
दैनिक समाचार बुलेटिन
शुक्रवार, 1 फ़रवरी 2019

राष्ट्रीय संगोष्ठी : भारतीय साहित्य में गाँधी

गाँधी समस्त कलाओं का विषय हैं : अरमूगन परसुरामन

साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित किए जा रहे साहित्योत्सव के चौथे दिन का मुख्य आकर्षण था 'भारतीय साहित्य में गाँधी' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी। संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए लब्धप्रतिष्ठ अंग्रेज़ी कवि एवं लेखक जयंत महापात्र ने कहा कि मैं महात्मा गाँधी के बारे में बोलते हुए अपने को बहुत छोटा पाता हूँ। उन्होंने कहा कि गाँधी साहित्य, चित्र, नाटक, नृत्य आदि कलाओं का विषय हो गए हैं। मैंने खुद भी उनपर एक लंबी कविता लिखी थी। विशिष्ट अतिथि मॉरीशस सरकार के पूर्व शिक्षा मंत्री तथा यूनेस्को के पूर्व निदेशक अरमूगम परसुरामन ने कहा कि गाँधी व्यापक दृष्टि वाली शख्शियत थे। उनकी दृष्टि में उच्च तकनीक से युक्त औद्योगीकृत भारत नहीं था, बल्कि ग्रामीण भारत था, जिसके लिए वे रामराज्य की परिकल्पना करते थे। अपने बीज भाषण में प्रख्यात इतिहासकार एवं लेखक सुधीर चंद्रा ने गाँधी जी द्वारा कहे उन शब्दों के पीछे की परिस्थितियों को समझने के लिए आग्रह किया जिनमें वे अपने अंतिम दिनों में लगातार दुनिया से जाने की बात कर रहे हैं। यह स्थिति 30 जून 1947 के बाद के भाषणों में देखी जा सकती है। इससे पहले वे सामान्यता 125 वर्ष तक जीने की बात करते हैं लेकिन फिर अचानक अपने अभी तक जिंदा रहने पर भी सवाल उठाने लगते हैं ? आगे उन्होंने कहा कि गाँधी की मृत्यु पर भी उस समय राजनीतिक हलकों में जो प्रतिक्रिया हुई वे भी परेशान करनेवाली थी। आज हम सबको इन परिस्थितियों के लिए कौन जिम्मेदार था ? इस पर चर्चा अवश्य करनी चाहिए। चंद्रशेखर कंबार ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि कोई यह तर्क कर सकता है कि गाँधी की विचारधारा और जीवनचर्या को वास्तविक जीवन में उतारना असंभव है, लेकिन हम उन्हें इतनी आसानी से खारिज नहीं कर सकते। आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए भारतीय साहित्य पर गाँधी के प्रभावों को संदर्भित करते हुए संगोष्ठी की महत्ता को उजागर किया। समाहार वक्तव्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने दिया।

अरमूगम परसुरामन, चंद्रशेखर कंबार, जयंत महापात्र, सुधीर चंद्रा एवं माधव कौशिक

इस अवसर पर आदि शंकराचार्य द्वारा लिखित 'प्रश्नोत्तरमालिका' को मूल संस्कृत पाठ के साथ 23 भाषाओं में अनुवाद एक ही जिल्द में विमोचित किया गया, जिसका प्रकाशन साहित्य अकादेमी द्वारा किया गया है। साथ ही गाँधी की रचनाओं एवं व्याख्यानों के संचयन 'ऑल मेन आर ब्रदर्स' (संपादक : कृष्ण कृपलानी) के दस भाषाओं में अकादेमी द्वारा प्रकाशित अनुवाद का लोकार्पण भी किया गया।

संगोष्ठी का प्रथम सत्र 'इक्कीसवीं सदी में गाँधी के प्रासंगिकता' पर केंद्रित था। सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रख्यात आलोचक एवं कवि विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि गाँधी के चिंतन का आरंभ बिंदु शोषितों के प्रति करुणा से शुरू होता है, जबकि इसी समय दूसरे महान विचारक कार्लमार्क्स शोषकों के प्रति आक्रोश से भरे रहे। इस तरह हम गाँधी जी की पूरी सोच में कोमलता और करुणा को पाते हैं। आगे उन्होंने कहा कि गाँधी का मॉडल सभ्यता के लिए अलग और विकास के लिए अलग था। उनके इस मॉडल में स्थानीय परिवेश की भागीदारी सर्वप्रथम थी। आज इक्कीसवीं सदी में हम गाँधी के विचारों के साथ ही अपनी सभ्यता को बचा पाएँगे। इसी सत्र में नंदकिशोर आचार्य ने गाँधी के अर्थशास्त्र को नैतिक अर्थशास्त्र बताते हुए कहा कि आनेवाले समय में ऐसे ही अर्थशास्त्र के सहारे विकास की कल्पना की जा सकती है। अवधेश कुमार सिंह ने कहा कि आज भी गाँधी के विचारों को अपने जीवन में समाहित कर 21 वीं सदी की बहुत सी मुश्किलों से निजात पा सकते हैं। नीरा चंदोक ने कहा कि भूमंडलीकृत विश्व में स्वराज के तहत सत्य और अहिंसा के द्वारा ही गाँधी को सही मायने में समझा जा सकता है। मिनी प्रसाद ने गाँधी की पारिस्थतिकी संबंधी अवधारणा विषय पर अपनी बात रखी। गाँधी और दलित आंदोलन पर नरेंद्र जाधव की अध्यक्षता में, गोपाल गुरु ने गाँधी तथा हरिजन की अवधारणा पर, श्यौराज सिंह बेचैन ने दलित आंदोलनों तथा साहित्य पर गाँधी का प्रभाव विषयों पर अपने विचार रखे। नरेंद्र जाधव ने गाँधी एवं अंबेडकर के संबंधों पर चर्चा करते हुए कहा कि उन दोनों ने साथ मिलकर काम करने की आवश्यकता को समझ लिया था।

आज के कार्यक्रम

राष्ट्रीय संगोष्ठी : भारतीय साहित्य में गाँधी
साहित्य अकादेमी सभागार, अपराह्न 10.00 बजे

परिचर्चा : मीडिया और साहित्य
रवींद्र भवन परिसर, पूर्वाह्न 11.00 बजे

परिचर्चा : नाट्य लेखन का वर्तमान परिदृश्य
रवींद्र भवन परिसर, अपराह्न 2.30 बजे

सांस्कृतिक कार्यक्रम
इंडो-फ्यूज़न संगीत : सुनीता भुयाँ एवं समूह द्वारा
रवींद्र भवन परिसर, सायं 6.00 बजे

आमने–सामने

सत्ताश्रयी लेखक सच्चा साहित्यकार नहीं है : चित्रा मुद्गल

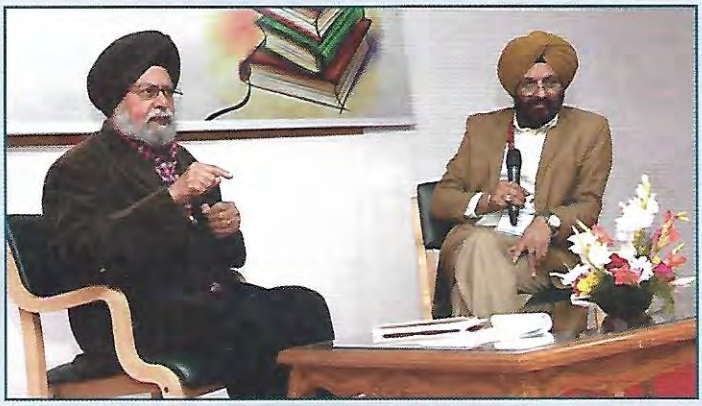

साहित्योत्सव के अंतर्गत चौथे दिन 'आमने-सामने' कार्यक्रम के अतर्गत साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2018 से सम्मानित छह लेखकों के साक्षात्कार का कार्यक्रम आयोजित हुआ। आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए कार्यक्रम की विशिष्टता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव (कोलकाता) देवेंद्र कुमार देवेश द्वारा किया गया।

हिंदी की प्रतिष्ठित कथा लेखिका चित्रा मुद्गल का साक्षात्कार सुपरिचित हिंदी विदुषी के. वनजा ने लिया। श्रीमती मुद्गल ने कहा कि साहित्यकार जनसामान्य का प्रतिनिधि होता है। सत्ताश्रयी लेखक सच्चा साहित्यकार नहीं है, क्योंकि सत्ता ने सदैव साहित्य की आवाज़ को दबाया है। एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि महात्मा गाँधी के संदेश मेरे लिए श्रीमद्भगवद्गीता के समान हैं।

पंजाबी के प्रतिष्ठित कवि मोहनजीत का साक्षात्कार चर्चित पंजाबी लेखक रवैल सिंह ने लिया। मोहनजीत ने कहा कि उनके विचार में कविता इलहाम है, लेकिन उसको सँवारना भी पड़ता है। उन्होंने बताया कि मैं प्रगतिशील दृष्टि और सोच तथा सकारात्मकता का पक्षधर हूँ। एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि उनका मानना है कि लेखक स्वानुभूत सत्य के साथ-साथ दूसरों की अनुभूतियों को भी अपने लेखन में व्यक्त करने में सक्षम है।

तमिळ के प्रख्यात लेखक, पटकथाकार एस. रामकृष्णन का साक्षात्कार सुपरिचित तमिळ साहित्यकार ए. आर. वेंकटाचलपति ने लिया। अपने साक्षात्कार में श्री रामकृष्णन ने कहा कि लेखक जो कहानियाँ अथवा उपन्यास लिखते हैं, वह काल्पनिक नहीं होता, बल्कि सत्य होता है।

तेलुगु के प्रतिष्ठित साहित्यकार एवं शिक्षाविद् के. इनोक का साक्षात्कार प्रख्यात तेलुगु लेखक जे. एस. मूर्ति 'विहारी' द्वारा लिया गया। अपनी पुरस्कृत एवं अन्य कृतियों को संदर्भित करते हुए इनोक ने कहा कि मेरे लेखन का सरोकार दलित, पिछड़े, दबे-कुचले, शोषित लोग और समाज हैं। एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने शैक्षिक पाठ्यक्रम के क्षेत्र में उठाए गए अपने क़दमों के बारे में बताया।

कन्नड के प्रसिद्ध लेखक के. जी. नागराजप्पा का साक्षात्कार चर्चित विदुषी आशा देवी द्वारा लिया गया। नागराजप्पा ने कहा कि वर्तमान समय प्रचार और प्रोपेगेंडा का है, हम इसके गुलाम हो गए हैं। विचार और आचार बहुत पीछे छूट गए हैं। यह चिंता का विषय है। एक सवाल का जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि पितृसत्ता भारत की मूल परंपरा नहीं है, बल्कि यहाँ मातृसत्ता रही है।

असमिया के प्रतिष्ठित कवि सनंत ताँति का साक्षात्कार चर्चित हिंदी कवि-अनुवादक दिनकर कुमार द्वारा लिया गया। श्री ताँति ने अपनी रचना-यात्रा के बारे में बताते हुए कहा कि उनकी मातृभाषा ओड़िया है, बाङ्ला में उन्होंने लेखन की शुरुआत की, लेकिन बाद में असमिया में लिखने लगे। कैंसर जैसी बीमारी से जूझ रहे इस कवि ने कहा कि कविता उन्हें संजीवनी देती है।

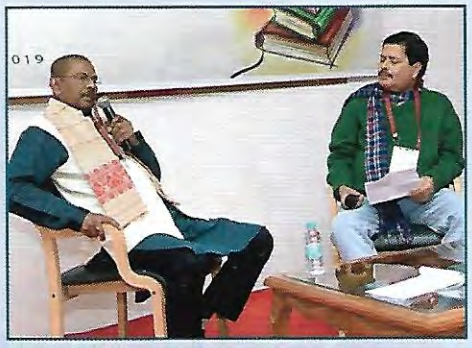

युवा साहिती : नई फ़सल : युवा लेखक सम्मिलन

युवा ख़ुद से, समाज से और प्रकृति से संवाद करें : के. सच्चिदानंदन

साहित्योत्सव के अंतर्गत 'युवा साहिती' कार्यक्रम के अंतर्गत अखिल भारतीय युवा लेखक सम्मिलन का आयोजन किया गया। सम्मिलन का उद्घाटन मलयाळम् के प्रतिष्ठित कवि के. सच्चिदानंदन द्वारा किया गया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने कहा कि युवाओं को खुद से, समाज से और प्रकृति से अवश्य संवाद करना चाहिए। उन्होंने युवाओं को परंपराओं में विश्वास करने तथा अपनी सोच को करुणा के और नज़दीक ले जाने का आह्वान किया। उन्होंने युवाओं को अनुवाद पढ़ने और अनुवाद करने की भी सलाह दी, जिससे कि उनकी शब्दों की पकड़ और व्यापक हो सके।

आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए युवा लेखकों को लेकर अकादेमी की गतिविधियों के बारे में संक्षेप में बताया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि समाज की सभी संस्थाओं का यह दायित्व है कि वे युवा लेखन को प्रोत्साहित करें। सत्रांत में समाहार वक्तव्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक द्वारा दिया गया। सम्मिलन के सत्रों का संचालन अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी द्वारा किया गया।

सम्मिलन के अंतर्गत कविता-पाठ के दो सत्र टी. देवीप्रिया तथा पंकज राग की अध्यक्षता में संपन्न हुए, जबकि कहानी-पाठ सत्र की अध्यक्षता गौरहरि दास ने की। 'साहित्य आज' विषयक परिचर्चा सत्र निर्मलकांति भट्टाचार्जी की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। इस सत्र में देव भूषण बोरा (असमिया), संगीता सान्याल (अंग्रेज़ी), जगदीश गिरि (राजस्थानी) और एम. नारायण शर्मा (तेलुगु) ने अपनी-अपनी भाषाओं में साहित्य और युवा लेखन की वर्तमान स्थितियों पर अपने विचार रखे। ब्रह्म दत्त मगोत्र (डोगरी), नेहा बंसल (अंग्रेज़ी), अनंत राठोड़ (गुजराती), घनश्याम देवांश (हिंदी), परवेज़ गुलशन (कश्मीरी), श्रीजि पेरूम्थचन (मलयाळम्), अमृत तेलंग (मराठी), अली राजपुरा (पंजाबी), अभिषेक शुक्ल (उर्दू), जयश्री बर' (बोडो), सूफ़िया ख़ातून (अंग्रेज़ी), नारायण झा (मैथिली), मनोज चावला (सिंधी), संजय कुमार चौबे (संस्कृत), श्याम सी. टुडु (संताली) एवं आर. वूबालन (तमिळ) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। जबकि मौमिता (बाङ्ला), श्रीकांत दुबे (हिंदी), श्रीधर वनवासी (कन्नड), जयेश राउत (कोंकणी) और रविनारायण दाश (ओड़िया) ने अपनी कहानियों का पाठ किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

गायन–बायन, माटी अखरा एवं राम विजय खंड दृश्य नाटक की प्रस्तुति

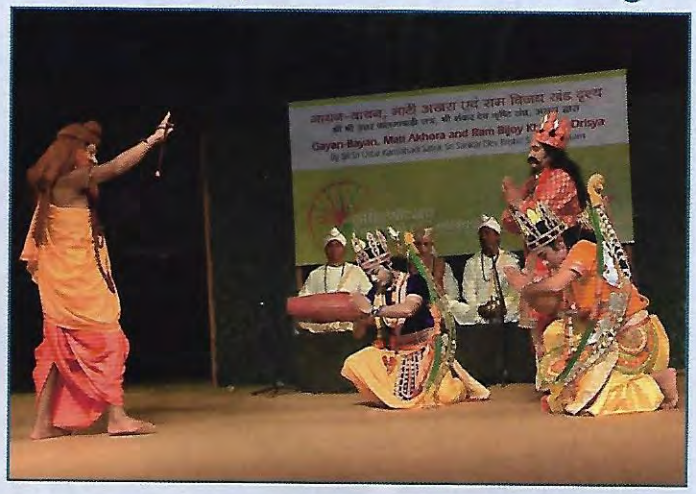

गायन-बायन, माटी अखरा एवं राम विजय खंड दृश्य नाटक की प्रस्तुति श्री श्री उत्तर कमलाबाड़ी सत्र शंकरदेव कृष्टि संघ, असम द्वारा की गई। गायन बायन को 'पूर्व-रंग' भी कहा जाता है, जो 'खोल' (ढोल) और 'ताल' (झांझ) का मिश्रित संगीत है। जो व्यक्ति झांझ बजाता है, उसे 'गायन' कहा जाता है और ढोल बजाने वाले को 'बाण' कहा जाता है। एक साथ, इसे 'गायन-बायन' कहते हैं। संगीत वाद्ययंत्र (खोल-ताल) के साथ यह आर्केस्ट्रा समूह शुरू से अंत तक कई छंदों का पाठ करते हुए 'मोना' (नाटक) की प्रस्तुति करता है। 'सत्रीय नृत्य' को सीखने का पहला चरण 'माटी अखरा' है। यह एक कठोर पाठ्यक्रम-प्रक्रिया के माध्यम से किया जानेवाला प्रारंभिक अभ्यास है। रामविजय खंड दृश्य नाटक 16 वीं शताब्दी के दौरान वैष्णव आंदोलन के साथ अस्तित्व में आए 'अंकिया नाट' का एक अंग है।

`ऑल मेन आर ब्रदर्स' (संपादक : कृष्ण कृपलानी) दस भाषाओं में लोकार्पित

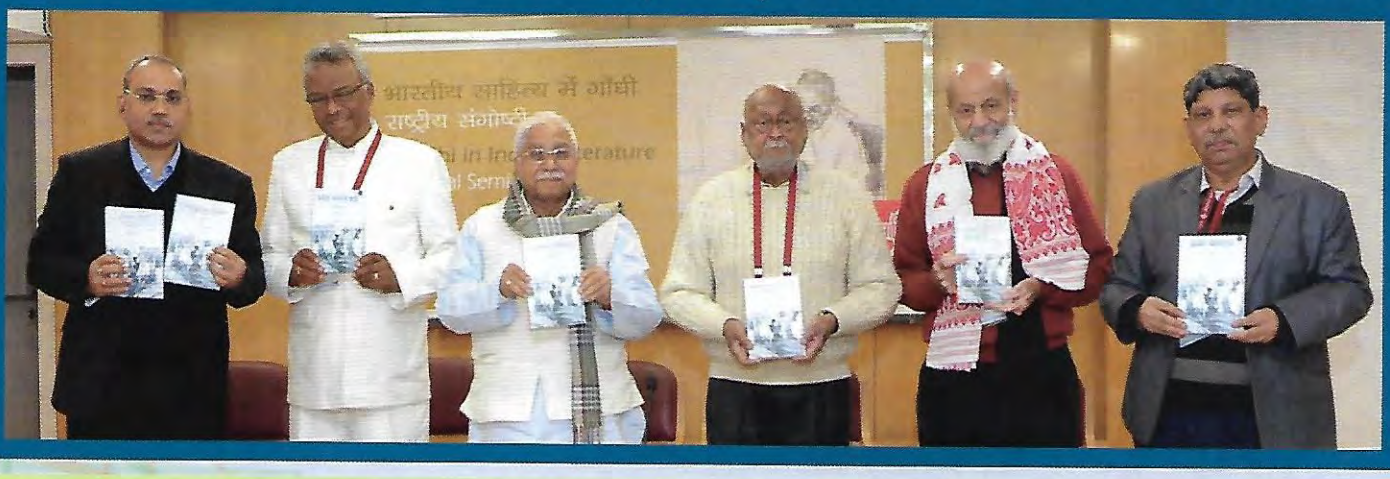

साहित्योत्सव के कार्यक्रम

2 फ़रवरी 2019

राष्ट्रीय संगोष्ठी : भारतीय साहित्य में गाँधी (जारी...)
पूर्वाह्न 10.00 – सायं 6.00 बजे, साहित्य अकादेमी सभागार

आओ कहानी बुनें : बच्चों के लिए विविध कार्यक्रम
पूर्वाह्न 10.30 – अपराह्न 2.00 बजे, रवींद्र भवन परिसर

परिचर्चा : भारत में प्रकाशन की स्थिति
पूर्वाह्न 11.00 बजे – अपराह्न 1.30 बजे, रवींद्र भवन परिसर

ट्रांसजेंडर कवि सम्मिलन
अपराह्न 2.30 – सायं 5.00 बजे, रवींद्र भवन परिसर

साहित्य अकादेमी
रवींद्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110001
ईमेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in
दूरभाष : 011-23386626/27/28, फ़ैक्स : 011-23382428
वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in